सनाढ्य जाति गुनाढ्य हैं जगसिद्ध शुद्ध सुभाव।
सुकृष्णदत्त प्रसिद्ध हैं महि मिश्र पंडितराव॥
गणेस सो सुत पाइयो बुध कासिनाथ अगाध।
अशेस शास्त्र विचारि कै जिन जानियो मत साध॥4॥

शब्दार्थ—सनाढ्य = ब्राह्मणों का एक गोत्र। गुनाढ्य = गुणवान्। बुध = विद्वान्। अगाध = अपार। अशेस = सम्पूर्ण। साध = साधु, उत्तम।

प्रसंग—इस छंद में कवि केशव ने अपने वंश का परिचय दिया है।

व्याख्या—जाति के सनाढ्य ब्राह्मण, जगत् में सिद्ध अर्थात् पूजनीय, शुद्ध स्वभाव वाले पंडितराज कृष्णदत्त मिश्र भूमंडल पर प्रसिद्ध हैं। इन्हें गणेश के समान अपार विद्वान् काशीनाथ पुत्र प्राप्त हुआ जिन्होंने सब शास्त्रों को विचार कर उत्तम मत को मान लिया था, अर्थात् जिन्होंने शास्त्रों को गम्भीर अध्ययन किया था।

अलंकार—अनुप्रास, उपमा।